ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI

Subject- Hindi Second Language

Topic- चाँद से थोड़ी गप्पें (कविता)

BY - ANU BALA

चाँद से थोड़ी गप्पें (कविता)

कवि – शमशेर बहादुर सिंह

चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

कविता का परिचय - चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता के माध्यम से कवि ने बाल सुलभ कल्पनाओं का अत्यंत मनमोहक चित्रण किया है। बच्चे चाँद से अपना रिश्ता जोड़े रखते हैं । वे चाँद को देखकर अनेक कल्पनाएँ करते हैं ।

इस कविता में एक छोटी सी लड़की आकाश को चाँद का वस्त्र समझती है ,जिस पर तारे जड़े हैं और उसका वस्त्र सभी दिशाओं में फैला हुआ है उसमें से उसका गोरा-चिट्टा मुँह दिखाई देता है ।
चाँद के घटने - बढ़ने वह कोई बीमारी समझती है।

कविता - चाँद से थोड़ी गप्पें

कवि - शमशेर बहादुर सिंह

चाँद से थोड़ी गप्पें (कविता)

4. चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

(दस-ग्यारह साल की एक लड़की)

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,

NCERT republished

अपनी **पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त**

तिरछे – slanting ज़रा – थोड़े से little खूब – काफ़ी lots of जड़ा होना – लगा होना to fixed on , to attach
कुल – पूरा full
आकाश –आसमान sky
पोशाक – वस्त्र ,कपड़े cloths
चारों सिम्त - चारों ओर all around
गोरा - चिट्टा ,बहुत सफ़ेद fair , white

व्याख्या - इस कविता में एक दस- ग्यारह साल की लड़की चाँद से बातें कर रही है । लड़की कहती है आप एकदम गोल हैं, पर फिर भी ज़रा तिरछे नज़र आते हैं। यह तारों जड़ा पूरा आकाश आपकी पोशाक है, और आप इसे पहने हुए हैं। इस पोशाक को अपने चारों ओर इस तरह फैला रखा है कि इसके बीच से बस आपका गोरा - चिट्टा और गोल- मटोल चेहरा ही दिखाई देता है।

चाँद से थोड़ी गप्पें (कविता)

अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है:

तिरछे – टेढ़े slanting
नज़र आना – दिखाई देना Appearance
बुद्धू-मूर्ख - foolish
गोकि-यानि - it meant
निरा – एकदम absolute

व्याख्या - लड़की कहती है कि आप अजीब हैं। पता नहीं कैसे तिरछे नज़र आते हैं। पर आप मुझे मूर्ख मत समझिए । मैं जानती हूँ कि आपको कोई बीमारी है।

चाँद से थोड़ी गप्पें (कविता)

आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं—
दम नहीं लेते हैं जब तक बि ल कु ल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

घटना – कम होना decrease
बढ़ना - increase
बिलकुल-completely
दम -साँस breath
मरज़-बीमारी illness .

व्याख्या - लड़की चाँद से कहती है कि जब आप घटना शुरू करते हैं तो बस घटते ही चले जाते हैं , बढ़ना शुरू करते हैं तो तब तक बढ़ते हैं जब तक बिलकुल गोल न हो जाएँ । आपकी यह बीमारी ठीक ही नहीं होती है ।

चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता का सार:-

चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता का सार:-

प्रस्तुत कविता हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और कवि श्री शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखी गई है। इस कविता में एक दस-ग्यारह साल की लड़की को चाँद से गप्पें लड़ाते हुए अर्थात् बातें करते हुए दिखाया गया है। वह चाँद से कह रही है कि यूं तो आप गोल हैं, पर थोड़े तिरछे-से नज़र आते हैं। आपने इस तारों-जड़ित आकाश का वस्त्र पहना हुआ है तथा उसके बीच में से आपका केवल ये गोरा-चिट्टा और गोल-मटोल चेहरा ही दिखाई देता है।

वो चाँद से कहती है कि हम जानते हैं कि आपको कोई बीमारी है, तभी तो आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं और बढ़ते हैं तो बढ़ते ही रहते हैं। आप ऐसा तब तक करते हैं, जब तक आप पूरे गोल नहीं हो जाते। वो आगे कहती है, पता नहीं क्यों आपकी ये बीमारी ठीक ही नहीं होती। इस तरह कवि ने चाँद के प्रति एक छोटी-सी बच्ची की भावनाओं का बड़ा ही रोचक और मनभावन चित्रण किया है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न – 1 चाँद की पोशाक पर क्या जड़ा है?
उत्तर :- चाँद की पोशाक पर तारे जड़े हैं |

प्रश्न – 2 चाँद घटते-घटते कब गायब हो जाता है?
उत्तर :- चाँद घटते-घटते अमावस्या को गायब हो जाता है |

प्रश्न – 3 चाँद अपनी पोशाक कहाँ फैलाए हुए है ?
उत्तर :- चाँद अपनी पोशाक सभी दिशाओं में फैलाए हुए है |

प्रश्न – 4 लड़की किससे बातें कर रही है ?
उत्तर :- लड़की चाँद से बातें कर रही है |

प्रश्न – 5 चाँद कैसा है ?
उत्तर :- चाँद गोल है पर घटता - बढ़ता रहता है |

प्रश्न – 6 चाँद के चेहरे का रंग कैसा है ?
उत्तर :- चाँद के चेहरे का रंग गोरा - चिट्टा है |

प्रश्न – 7 लड़की के अनुसार चाँद की बीमारी कैसी है ?
उत्तर :- लड़की के अनुसार चाँद की बीमारी लाइलाज है|

प्रश्न – 8 'चाँद से थोड़ी गप्पें' कविता के कवि का नाम लिखिए |
उत्तर :- 'चाँद से थोड़ी गप्पें' कविता के कवि का नाम शमशेर बहादुर सिंह है|

प्रश्न – 9 लड़की के अनुसार चाँद के घटने-बढ़ने का क्या कारण है ?
उत्तर :- लड़की के अनुसार चाँद के घटने-बढ़ने का कारण कोई बीमारी है |

प्रश्न – 10 'अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त' - यहाँ 'चारों सिम्त' का क्या अर्थ है?
उत्तर :- यहाँ 'चारों सिम्त' का अर्थ है – चारों दिशाएँ |

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1 चाँद का चेहरा कैसा है और वह कैसा नज़र आता है?

उत्तर :- चाँद का चेहरा गोरा - चिट्टा और गोल - मटोल है और वह तिरछा नज़र आता है ।

प्रश्न -2 लड़की किससे और क्या बातें कर रही है ?

उत्तर :- लड़की चाँद से बातें करते हुए उसके आकार-प्रकार और उसकी पोशाक के बारे में बातें कर रही है।

प्रश्न -3 लड़की के अनुसार चाँद बढ़ते - बढ़ते किस स्थिति को प्राप्त करता है ?

उत्तर :- लड़की के अनुसार चाँद उस समय तक बढ़ता जाता है जब तक कि बिल्कुल गोल ना हो जाए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1 चाँद की पोशाक के बारे में कविता में क्या कहा गया है?

उत्तर:- चाँद ने पूरे आकाश को अपनी पोशाक बना लिया है,जिसमें तारे जड़े हैं।इस पोशाक में चाँद इस तरह लिपटा हुआ है कि उसके बीच से केवल उसका गोल -मटोल चेहरा ही दिखाई देता है।

प्रश्न -2 लड़की खुद को बुद्धू समझने से क्यों मना करती है?

उत्तर:- लड़की चाँद से कहती है कि उसे चाँद के घटने-बढ़ने और तिरछे नज़र आने का कारण पता है| चाँद उसे बेवकूफ ना समझे। वह जानती है कि चाँद किसी बीमारी से पीड़ित होने के कारण वह इस तरह घटता -बढ़ता रहता है |

Class test-

1 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए :-

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे

प्रश्न – 1 कवि और कविता का नाम लिखिए।
प्रश्न – 2 चाँद से बातें कौन कर रहा है?
प्रश्न – 3 गोल कौन है और वह कैसा नज़र आता है ?
प्रश्न – 4 चाँद का गोरा-चिट्टा गोल-मटोल मुँह कहाँ से दिखाई दे रहा है?
प्रश्न – 5 चाँद ने चारों सिम्त क्या फैलाए हुए है?

2 - निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर **प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए :-**

वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है :
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं
दम नहीं लेते हैं जब तक बिलकुल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में ....
आता है।

प्रश्न– 1 ‘दम न लेना’ का क्या अर्थ है ?
प्रश्न– 2 इस कविता के अनुसार चाँद हमें क्या समझता है ?
प्रश्न– 3 **जब** चाँद घटने लगता है तो क्या होता हैं ?
प्रश्न– 4 चाँद के घटने- बढ़ने क्या कारण है ?

प्रश्न -1 कवि और कविता का नाम लिखिए।
उत्तर:- कवि का नाम-शमशेर बहादुर सिंह।
कविता का नाम-चाँद से थोड़ी-सी गप्पें।
प्रश्न -2चाँद से बातें कौन कर रहा है?
उत्तर:- चाँद से बातें लड़की कर रही है ।
प्रश्न -3गोल कौन है और वह कैसा नज़र आता है ?
उत्तर:- गोल चाँद है और वह ज़रा-सा तिरछा नज़र आता है।
प्रश्न - 4 चाँद का गोरा-चिट्टा और गोल-मटोल मुँह कहाँ से दिखाई दे रहा है?
उत्तर:- चाँद का गोरा-चिट्टा गोल-मटोल मुँह उसकी पोशाक में से दिखाई दे रहा है|
प्रश्न – 5 चाँद ने चारों सिम्त क्या फैलाए हुए है?
उत्तर:- चाँद ने चारों सिम्त अपनी पोशाक को फैलाए हुए है|

प्रश्न-1 दम न लेना' का क्या अर्थ है?
उत्तर:- दम न लेना' का अर्थ है विश्राम न करना।
प्रश्न-2 इस कविता के अनुसार चाँद हमें क्या समझता है?
उत्तर:- चाँद हमें निरा बुद्धू समझता है ।
प्रश्न–3 जब चाँद घटने लगता है तो क्या होता हैं?
उत्तर:- जब चाँद घटने लगता है तो घटता ही चला जाता है।
प्रश्न–3 चाँद के घटने- बढ़ने क्या कारण है?
उत्तर:- चाँद के घटने- बढ़ने का कारण बीमारी है

मौखिक -
प्रश्न -1- क्या आपने कभी अपने आस-पास मौजूद किसी वस्तु को देखकर कोई कल्पना की है ?

प्रश्न -2- आपको चाँद कैसा लगता है ?